हरीश सेठी 'झिलमिल'

फूल

सुंदर-सुंदर फूल खिले हैं।
आपस में सब हिले-मिले हैं।।

फूलों की है सुंदर क्यारी।
आभा इनकी लगती न्यारी।।

आपस में सब ये बतियाते।
मंद-मंद सारे मुस्काते।।

सबको सुंदर पाठ पढ़ाते।
सीख मनोहर ये दे जाते।।

फूलों जैसे तुम मुस्काना।
और सभी को सुख पहुँचाना।।

काँटों से तुम मत घबराना।
हरदम अपना फर्ज़ निभाना।।

दोस्त सभी बन जाओ

हाथी को मिल गए एक दिन,
कुत्ता,बिल्ली,बंदर।
हाथी बोला- सुनो दोस्तो,
आओ घर के अंदर।

क्यों लड़ते हो आपस में तुम,
सभी दोस्त बन जाओ।
मिलकर बैठो सभी प्रेम से,
ताजा खाना खाओ।

इस धरती पर सब जीवों को,
जीने का अधिकार।
आपस में खुशियाँ बाँटो तुम,
करो सभी से प्यार।

सुन हाथी दादा की वाणी,
सबने हाथ मिलाया।
और खुशी से भरकर सबने,
मीठा गाना गाया।

खेले कूदे, नाचे गाए,
उत्सव खूब मनाया।
आपस के सब भेद मिटाकर,
ढ़मढ़म ढोल बजाया।

 ISSN:2583-8849